Arts Science & Commerce College
Naldurg

International Multilingual Research Journal

Vidyawarta®

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Scanned by CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

April 2018, Issue-42, Vol-04

Date of Publication
14 April 2018

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned by CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

28) अहिल्याबाई होळकर यांचे पर्यावरण विषयक योगदान
प्रा. सत्यपाल पांडुरंग बनसोडे, जि. नांदेड || 127

29) सद्यस्थितीतील शेअर बाजारात होणाऱ्या महत्वाच्या घडामोडी
प्रा. कु. आर. जी. भाकरे || 130

30) भूदान चळवळीत राष्ट्रसंत तूकडोजी महाराजांचे योगदान
प्रा.डॉ. भानूदास डि. जामनेकर, जि. अमरावती || 132

31) समतेचे पुरस्कर्ते बापूसाहेब राजभोज
प्रा. किशोर के. काजळे, डोंबिवली (पूर्व) || 135

32) "नंदुरबार जिल्हयात आदिवासी समाजात ख्रिश्चन मिशनरीनी केलेले योगदान"
प्रा. किशोर वसंतराव सोनवणे & प्रा.डॉ. सुधाकर लोटन जाधव, जि. धुळे || 144

33) भारतातील लघु उद्योग : एक अभ्यास
प्रा. डॉ. रत्नाकर रामराव कांबळे, परभणी || 148

34) पेसा कायद्याचा आदिवासी जीवनावर झालेला परिणाम एक अभ्यास
फरिदा शफीक खान, ता. जि. धुळे , महाराष्ट्र || 151

35) बुध्दकालीन स्त्रियांचे स्थानवधम्मक्रांतीनंतर स्त्रियांच्या जीवनातील बदल
पद्मानंद मनोहर तायडे, वाशिम || 154

36) ०—५ वर्ष के बच्चों में कुपोषण की समस्या
डॉ अनुमति कुमारी & मधु कुमारी, राँची || 157

37) नगरीय जनसंख्या वृद्धि : प्रादुर्भावित समस्या एवं निदान (जबलपुर नगर के संदर्भ में)
आशुतोष मेघ & डॉ. डी. पी. नामदेव, सिवनी || 160

38) कमलेश्वर के उपन्यासों में, वर्णित सामाजिक समस्याएँ
डॉ. सीतापरा जिज्ञासा आर. राजकोट (गुजरात) || 167

39) वैश्वीकरण निजीकरण और उदारीकरण की अवधारणाएँ (सांस्कृतिक परिप्रेक्ष विशेष संदर्भ में)
प्रा.डॉ. हाशमबेग मिर्झा & प्रा.पाटील एस. डी., जि.जालना || 170

40) रवीन्द्रनाथ टैगोर की शैक्षिक विचारधारा
डॉ०वाई०के० सिह & दिनेश कुमार मिश्र, चित्रकूट सतना || 173

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

39

वैश्वीकरण निजीकरण और उदारीकरण की अवधारणाएँ

(सांस्कृतिक परिप्रेक्ष विशेष संदर्भ में)

प्रा.डॉ. हाशमबेग मिर्झा
शोधनिर्देशक,
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविदयालय नलदुर्ग, जि.उस्मानाबाद

प्रा.पाटील एस. डी.
शोधार्थी,
सिध्दार्थ कला वाणिज्य व विज्ञान महाविदयालय जाफ्राबाद,
जि.जालना

****

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में आज उपभोक्तावादी संस्कृति के निर्मण आक्रमन ने आज के सामाजिक जीवन में आमूल परिवर्तन होते दिखाई दे रहे है | बाजार एक महासत्ता के रुप में जीवन के हर क्षेत्र में अपना अधिकार जमाने लगा है | अब हर चीज खरीदने और बेचने के लिए पैददा हो रही है | यहाँ तक मनुष्य सभ्यता कला, सौदंर्य और मानवीय मूल्य भी क्रय विक्रय की चीजो में तब्दील हो रहे है | वैश्वीकरण में मात्र पश्चिमी पूंजी का ही नही पश्चिमी संस्कृति का भी विस्तारीकरण हो रहा है | वैश्वीकरण का स्वरुप समरुपता का है | हमारा देश विविधता भरा देश है | यहाँ भाषा, धर्म , संस्कृति की विविधता मे एकता ही भारतीयता है | इसीलीए कहा जा रहा है की वैश्वीकरण में सबसे बडा खतरा भारतीय संस्कृति को हो रहा है | पहले आधुनिकता के नामपर भारतीय संस्कृति का पाश्चात्यीकरण हुआ अब वैश्वीकरण के नामपर अमेरिका की उपभोक्तवादी संस्कृति से संस्कारित एक नई सभ्यताका विकास देखा जा रहा है | आज इस उपभोक्तावादी संस्कृति से संस्कारित एक नई सभ्यताका विकास देखा जा रहा है | आज इस उपभोक्तावादी एक नई अंध संस्कृति से संस्कारित एक नई सभ्यताका विकास देखा जा रहा है | आज इस उपभोक्तावादी एक नई अंध संस्कृति का प्रचार - प्रसार जोरो से हो रहा है | इसके लिए टी.वी.और फिल्म प्रमुख माध्यम बन गये है | वैश्वीकरण ने हिन्दी के सामने कई व्दार खोल दिये है | और कुछ समस्याएँ भी उत्पन्न की है | कुछ चुनैतियाँ भी खडी हुई है | उसका सामना करने के लिए हे सन्नध्द होना ही पडेगा देश का अस्तित्व राजनैतिक और सांस्कृतिक अस्तित्व के साभ जुडा हुआ है |

शोध आलेख का उददेश्य -

आज वैश्वीकरण की अवधारणा आधुनिक विचारोसे प्रभावित है | इस आलेख में मुख्य विषय यह रहा है कि आधुनिक विचारोंके अंतर्विरोधो के बौध्दिक स्त्रोतों की पडताल करना है | साथ ही भारतीय संदर्भो में उत्तर आधुनिक वैचारिकी की व्यसावहारीक उपयोगिता की परख करना भी है , यद्यपि उसके बारे में मैने अलग से कुछ कहने की आवश्यकता नही समझी उसकी समुची व्यंजनापूर्ण बाते इस आलेख में मौजुद करने का एक प्रामाणिक प्रयास रहा है जो की आलेख पढने के बाद अनुभव किया जा सकता है |

वैश्वीकरण के नाम पर सांस्कृतिक साम्राज्यवाद -

बाजारवाद के माध्यम से एक बार फिर से वैश्वीकरण के नामपर आजादी के बाद हम समाजवाद की और निकल पडे है | भॉडे और फूहड किस्म के मनोरंजन गीत, संगीत, नृत्य, फैशन, वेशभूषा, खादय-सामग्री, आदतो और रुचियो को प्रचलन में लाकर वह जातीय संस्कृतियों की लयात्मकता को छिन्नमूलकर विजेताओं की भाषा, धर्म, शिक्षा, साहित्य आदि को उसके स्थानपर प्रतिष्ठित करता है | सांस्कृतिक साम्राज्यवाद एक खास तरह की राजनैतिक उदासीनताका भूमंडलीकरण कर रहा है | जातीय अस्मिता एवं प्रभुत्वशील सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के बीच है, दमन और उत्पीडन भय और आतंक, प्रलोभन एवं भ्रष्टाचार आदि आधुनिकतम उपकरनोसे सांस्कृतिक साम्राज्यवाद सुसज्जित है | भ्रष्टाचार और अक्षमताकी इस होड में गुलामी का स्वदेशीकरण और इजारेदार पूँजी की नयी - नयी बिगडैल संतानो का भूमंडलीकरण हो रहा है | साम्राज्यवाद इसे प्रगती बतलाता रहा है |

आधुनिक पूँजीवादी वर्ग समाज में प्रभुवर्ग अपने प्रचार-प्रसार के साधनो व्दारा जनमानस पर नियंत्रण स्थापित करता है | किंतु यह काम वह अकेले नही करता | इसके लिए वह बुध्दिजीवियो, पत्रकारो , शिक्षकों , कलाकारो, लेखको, संस्कृतिकर्मियो, वैज्ञानिको, न्यायविदो, तकनीकी विशेषज्ञो, धर्मगुरुओ, बाबाओं, नोकरशाहो की सेवाओ का उपयोग करता है | उनके सहयोग से ऐतिहासिक विकास की सामाजिक प्रकिया अपनी प्रभावशाली भूमीका अदा करते है | आज का यह संस्कृतिवाद पुराने सामाजिक डार्विनवाद का नया चेहरा है | राजनिती की तरह संस्कृति की दुनियामें भी सामाजिक डार्विनवाद ग्रेशन के नियम की तरह काम करता है | खोटे सिक्के बाजार की प्रतियोगीता में अच्छे सिक्कों को बाहर कर देते है | आज का कवि उपभोक्ता- संस्कृति और बाजारवाद से रुबरु है | वह हर विसंगतियों

Scanned by CamScanner

पर करारा आघात करता हुआ दिखाई देता है |

आज जिसे ग्लोबलाइजेशन या भूमंडलीकरण कहते है | वह अपने ही मुल्क की जमीन पर आंतरिक उपनिवेशवाद कायम करता है | बाजारवादी अर्थव्यवस्था की फितरत ही कुछ ऐसी है कि वह वाणिज्य , व्यापार और लेन देन के फीते से कामयाबी या नाकामयाबी को नापती है | भारत की आजादी की जयंती पर दूरदर्शन पर दिखाया जानेवाला बंदे मातरम कार्यक्रम भी बहुराष्ट्रीय उत्पादय को कोलगेट के व्दारा प्रायोजक न मिले तो उसे बंद करने में भारत सरकार राई रत्ती संकोच न करे |

आज तीसरी दुनिया के देशो की आंतरिक समस्याएँ कम नही है | इन देशो के राष्ट्रीय जीवन में सामाजिक संकट जिन रुप में अभिव्यक्त होता है , वे है भूख, बेरोजगगारी, गरीबी, अशिक्षा, निम्न जीवन स्तर और, औदयोगिक एवं तकनीकी पिछडापन , अल्प विकसीत उत्पादक शक्तियाँ समाज के एक हिस्से मे निरंतर फुलता उपभोक्तावाद, अंधराष्ट्रवाद, धार्मिक तत्ववाद, क्षेत्रीय अलगाववाद और इन सब के परिणाम स्वरुप राष्ट्रीय संपत्ति एवं अर्थव्यवस्था का निरंतर छीजन आदि | दुसरी तरफ एक ध्रुवीय दुनिया में बिमारी, युध्द, अशांति, आतंकवाद तथा असुरक्षा का जोर बढा है |

भारत के समकालीन आधुनिक चितंको ने यदि मनुष्य की नियति को वैश्वीकरण के संदर्भ में देखा है जो उनकी आधुनिकताको नकारा नही जा सकता | लेकिन भारतीय संदर्भ में उन्होने पश्चिमी आधुनिकता को थोपा है | भारतीय मनुष्यपर पाश्चात्य मनुष्य की नियति को आरोपित किया है | तब निश्चितही वह आधुनिकता विदेशी ही रहेगी | वे आधुनिक विचार हमें हमारे यथार्थ से भिन्न ही लगेंगे | इसलिए आधुनिकता देश काल के संदर्भ मे तभी नवीन होती है , यदि वह अपने देशकाल के ऐतिहासिक शक्तियो के साथ हो वह देश काल के संदर्भ में नवीन और युगांरतकारी प्रवृत्तियों की और संकेत करे |

संस्कृति का सवाल कोई तरल या अमूर्तमसला नही है | संस्कृतियों अनुकूल परिस्थितीयों में फलती फुलती है | शुध्द संस्कृति जैसी कोई चीज नही होती है | विश्व संस्कृति अलग - अलग राष्ट्रो की संस्कृतियोका मिला जुला रुप है | वह सभ्यताओ के संघर्ष से नही उनकी आपसी अंतक्रिया से, पारस्पारिक संपर्क से बनती है | मेरी दृष्टि में संस्कृति समाज के विभिन्न तबको व्दारा संपन्न भौतिक एवं सामाजिक व्यवहारो की श्रृंखला है | उन्ही व्यवहारो में किसी राष्ट्र का संपूर्ण राष्ट्रीय जीवन अभिव्यक्त भी होता है |

संस्कृति के प्रति इस दृष्टिकोन से विकसित पूँजीवादी देशो विशेषकर अमेरिका के लिए वाणिज्य, व्यापार , पूँजी , सेवाशर्ती , उपभोक्ता सामग्रियों एवं प्रौदयागिकी के अंकुठ प्रवाह का रास्ता खुलता है | क्योंकि संस्कृतियों के परागमन के निमित्त भी वही है | जिस तर्क से अमीर देश अपनी पूँजी , प्रोदयोगिकी एवं सेवा शर्तो का भूमंडलीकरण चाहते है | उसी तर्क से वे अपनी जीवन शैली, समाज, के मान-मूल्यो, खान-पान, तौर -तरीको , आदतों एवं आचार- विचार का भी भमंडलीकरण चाहते है | दूसरे शब्दो में इस भूमंडलीकरण का अर्थ है पश्चिमी वर्चस्व की पूर्ण स्वीकृति | एक अर्थप्रणाली, एक समाज व्यवस्था, एक संस्कृति और एक भाषा उसे आज आधुनिक युग में वैश्वीकरण के नामपर संस्कृतियों का परादेशीय संबंध बताता है |

आज की दुनिया बहुत यथार्थवादी और व्यावहारिक है | किसी देश की भाषा और संस्कृति में दूसरे देश की दिलचस्पी विशुध्द ज्ञान के लिए नही हो सकती | कुल मिलाकर भाषा के सवाल आर्थिक सांस्कृतिक विकास से जुडे है | सांस्कृतिक साम्राज्यवाद सिर्फ वर्चस्वशाली विचारों का निर्वाह ही नही करता | सांस्कृतिक ढाँचे के भीतर अपनी सुरक्षा के तंत्र भी विकसीत करता है | भूमंडलीकरण सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के एक ऐसे रुप को प्रकट करता है | जो राष्ट्रों के आर-पार पारंम्पारिक मेल जोल से नयी सांस्कृतियों के निर्माण और विकास को नही बल्कि संस्कृतियों के दमन और उत्पीडन के कारण वर्चस्वशाली संस्कृतियों के आक्रामक रुप को ही दर्शाता है | सूचना और प्रसारण की मोटी चादर कमजोर राष्ट्रो की सांस्कृतिक स्वायत्तता को या तो पूरी तरह से ढककर चेहरा- विहीन और निष्प्रभावी बना देती है |

सांस्कृतिक परंपरा में आधुनिक दृष्टिकोन -

स्वाधीन भारत के राष्ट्रीय जीवन में सांस्कृतिक संकट जिन रुपो में अभिव्यक्त हो रहा है | उनमें निरक्षरता, क्षेत्रीय एवं भाषाई अलगाव, अल्प विकसीत उत्पादक शक्तियाँ, धार्मिक एवं जातिवादी उन्माद, दहेज , पश्चिम में आयातित प्रति सांस्कृतिक जीवन शैली भारतीय अर्थतंत्र पर सामराजी पूँजी के निरंतर बढते दबाव के परिणाम स्वरुप कमजोर देशी अर्थतंत्र, आत्महत्या करते हुए किसान और रुढिग्रस्त दकियानूस विचारधाराओं की बाढ आदि प्रमुख है | कवि धूमिल ने इन्ही परिस्थितियों में लिखा है |

च्क्या आजादी तीन थके हुए रंगो का नाम है
जिन्हे एक पहिया ढोता है छ

या इसका कोई खास मतलब होता है ? खास मतलब से यहाँ अभिप्राय वर्ग भेद से है | यो तो वर्गभेद वर्ग समाजो का अनिवार्य दुर्गुन है |

हमारे देश मे प्रतिसांस्कृतिक विचारधाराओ की जो अपच बाढ आयी है | स्वाधीनता के बाद अंधविश्वासो एवं रुढिवादी ताकतो का जो उन्मेश हुआ है | उसका गहरा संबंध भारतीय पूँजीवाद के

Scanned by CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

विकास से है | भारत में एक ही धर्म को माननेवाले अथवा एक ही भौगोलिक सीमा मे रहनेवाले लोगो के धार्मिक कर्मकांड, पूजा पाठ के तौर- तरीको, शादी - ब्याह के रस्म रिवाजो, जन्म-मृत्यु के सामाजिक विधान में पर्याप्त अंतर दिखाई देता है | शोध के बाद नजर आता है कि धर्म और संस्कृति परस्पर जुडे होने के बावजूद एक दूसरे का पर्याय या विकल्प नही है | जिन देशो ने इस्लाम या ईसाइयत को अपनाया उन देशो का धर्म एक होने के बावजूद उनका सांस्कृतिक जीवन एक जैसा नही दिखाई देता |

भारतीय संस्कृति में बुध्दिजीवी :-

भारतीय परंपराओ और अंधविश्वासो के भारतीय संस्कृति के नाम पर घोर पूजक पाये जाते है | चाहे इस्पात संयत्र हो, या परमाणु केंद्र चाहे अंतरिक्ष प्रयोग शालाओ का शिलान्यास हो या रेल्वे पुलो का उदघाटन इन सब मौकोपर आयोजित कार्यक्रमों की शुरुआत शुभघडी मे वैदिक मंत्रोच्चार के साथ नारियल फोडकर किया जाता है | ऐसे कार्यक्रमों मे नेता, निरक्षर जनता, आस्थावादी धर्मगुरु, अफसर, न्यायाधिश, इंजीनियर, वैज्ञानिक, डॉक्टर, राजनितीज्ञ, कलाकार और संस्कृतिकर्मी, अमीर, गरीब सभी समभाव से हिस्सा लेते है | पारंपारिक कार्यक्रमों को टी.वी.पर दिखानेवाले प्रायोजकों की कमी नही है | किसी भी विज्ञापित माल की तरह हस्तरेखा, ज्योतिषी, तांत्रिक , दैव पुरुषो की वाणी, योग, वेदांत, अव्दैत, ध्यान, गीतोपदेश को बेचा जा सकता है | दूरदर्शन और दैनिक समाचार पत्रों में एतदर्श जो जानकारी दी जाती है, उसे कुछ इस तरह पेश किया जाता है मानो वे भारतीय संस्कृति का भाग्यविधाता है | और वही हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान का विषय है |

भारतीय बुध्दिजीवीयों का बहुत बडा हिस्सा मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग से आया है | पैसा हर रंग में खेलता है , उसे पाने के लिए वह हर संभव प्रयास करता है | कुर्सी, पद , प्रतिष्ठा, पैसा और हैसियत की अंधी दौड मे भारत का बुध्दिजीवी मध्यवर्ग पवित्रतावादी पागलो की तरह भाग रहा है | धर्म और अध्यात्म ने उसके मूल्यो को इस हद तक बिगाड दिया है कि पौराणिक सीता के दुःखोपर आँसुओं का सैलाब उँडेलनेवाला भाऊक मध्यवर्ग अपने व्यावहारिक जीवन मे अनेको जीवित सीताओ को दहेज के नामपर जिंदा जला देता है | संपत्ति के बटवारे में कोई झंझट न हो इसलिए विधवा को भारतीय संस्कृति में सती की महानता का आसान नाम देकर जला देने पर भी वह जुबान नही खोलता है | इसे वह पवित्रता और पतिव्रता का प्रमाण मानता है | हमारे मस्तिष्क पर धार्मिक अंधविश्वासों का जबर्दस्त पहरा है और हम उसी में पलते है | अंत में यही कह सकते है कि वैश्वीकरण संस्कृतियों का विभाजन करता है, वह एक देश में ही दो देश बनाता है |

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वैश्वीकरण के यु भारतीय आधुनिकताका जो संदर्भ है, वह पाश्चात्य भूमि से प्रभ है और अनास्था का दर्शन प्रस्तुत करता है | भारतीय चिंतन- प में आस्था, .मानवीयता सामुहिक विवेक तथा सत्य और असत बीच अंतर जैसे मूल्योंको भी यहाँ छेड दिया गया है | यहाँ पूँजी संस्कृति में उत्पन्न मूल्यहीनता के दर्शन को विश्वपटल पर प्र किया है |

संदर्भ संकेत-

१. हिन्दी साहित्येतिहास पाश्चात्य स्त्रोतों का अध्यय डॉ.हरमहेंन्द्रसिंह बेदी

२. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ.माधव सोनटव

३. विश्वभाष हिन्दी के साहित्यकार : डॉ.बापूराव दे

४. हिन्दी वैश्विक परिदृश्य : डॉ.पंडीतबत्रे

५. उत्तर आधुनिकता विभ्रम और यथार्थ : ड ॉ .र श्रीवास्तव.

❑❑❑

PRINCIPAL
Arts Science & Commerce College
Naldurg, Dist.Osmanabad-413602

Scanned by CamScanner